घोंसले तरह-तरह के

पक्षी अपने घोंसलों में हमेशा नहीं रहते। उन्हें घोंसलों की ज़रूरत केवल प्रजनन काल में अंडे सेने के लिए पड़ती है। घोंसलों की विविधता पर केंद्रित नरेंद्र देवांगन का आलेख।

मनुष्य के अलावा प्राणी जगत में और जीव-जंतु भी घर बनाते हैं। इस कारीगरी में दक्ष है पक्षी वर्ग। लेकिन मनुष्य जिस तरह अपने निवास का उपयोग करता है, पक्षी अपने घोंसलों में उस तरह नहीं रहते। उन्हें घोंसलों की ज़रूरत केवल प्रजनन काल में ही पड़ती है। जैसे ही बच्चे उड़ने लायक हो जाते हैं वे अपने घोंसले त्याग देते हैं। फिर अगले साल किसी उपयुक्त स्थान पर नया घोंसला बनाते हैं। कुछ पक्षी आने वाले सालों में पुराने घोंसलों का उपयोग करते हैं या पुरानी जगह पर ही नया घोंसला बना लेते हैं।

पक्षी वर्ग में कुछ जातियों के नर एवं मादा दोनों मिलकर घोंसले बनाते हैं लेकिन कुछ जातियों में किसी एक को ही नीड़ का निर्माण करना पड़ता है। बया एक ऐसा पक्षी है जिसका केवल नर ही घोंसला बनाता है। मादा बया घोंसला बनाने में नर की रत्ती भर भी मदद नहीं करती। दूसरी ओर, नर सॉन्ग थ्रश घोंसला बनाने के लिए घास-फूस तो इकट्ठा कर देता है लेकिन तिनकों को घोंसलों में लगाने-जमाने का काम मादा ही करती है।

कुछ पक्षियों के घोंसले बहुत साधारण और अनाकर्षक होते हैं। मोर जैसा सुंदर पक्षी ज़मीन को थोड़ा-सा खुरचकर उससे घोंसले का काम लेता है। बाज़, गिद्ध आदि तिनकों का चबूतरा-सा बना लेते हैं। किंग फिशर, बी ईटर आदि मिट्टी में बिल बनाकर अंडे देते हैं तो कठफोड़वा वृक्षों के तनों व शाखाओं के खोखले में घोंसले बनाते हैं।

परंतु कुछ घोंसले तो निसंदेह बहुत विचित्र होते हैं। फेज़ेंट टेल्ड जकाना नामक पक्षी तो पानी पर तैरने वाला घोंसला बनाता है। इस पक्षी का घोंसला काफी हल्का-फुल्का प्यालेनुमा होता है और नाव की तरह पानी की लहरों के साथ इधर-उधर तैरता रहता है।

बया पक्षी के घोंसले अपनी सुंदरता, टिकाऊपन एवं जटिलता में सानी नहीं रखते। पक्षी वर्ग में सर्वाधिक विचित्र घोंसले बया के ही हैं। घोंसले बनाने की ज़िम्मेदारी नर की होती है। एक नर के साथ कई मादाएं रहती हैं और वह अकेला कई घोंसलों का निर्माण करता है।

काले वक्ष वाली बया (*प्लासियस बंगालेन्सिस*) एकल कॉलोनी बनाती है परंतु *एक अन्य* बया *(प्लासियस फिलिपाइनस)* के झुंड-के-झुंड एक ही वृक्ष पर घोंसले बनाते हैं। सभी नर स्वतंत्र घोंसले बनाते हैं। कभी-कभी तो इनके द्वारा बनाए गए घोंसलों की संख्या एक ही वृक्ष पर 200 से भी ज़्यादा पहुंच जाती है। सभी घोंसले सचमुच एक नीड़ महानगर से प्रतीत होते हैं।

अफ्रीका महाद्वीप का सामाजिक बया पक्षी तो भारतीय बयाओं से बहुत आगे निकल गया है। इस जाति के सैकड़ों बया मिलकर एक झोपड़ेनुमा घोंसला बनाते हैं। सभी के परिवार इस सामूहिक घोंसले का उपयोग संयुक्त परिवार

एक अवलोकन यह भी

1966 के आसपास मैं पवारखेड़ा (होशंगाबाद) के रेल्वे क्वार्टर में रहता था। पास के पेड़ों पर बने कौओं के घोंसलों में मैंने तब भी तार के टुकड़े देखे थे। रेल्वे स्टेशन होने के कारण तार वहां कबाड़ के रूप में बिखरा होता था जो कौओं के लिए आसानी से उपलब्ध था। उनके घोंसलों में मैंने तार के अलावा रस्सी के टुकड़े, कपड़े की चिंदियां भी देखी हैं। इससे पता चलता है कि कौए अपने आसपास उपलब्ध सामग्री का इस्तेमाल अपने घोंसलों में करते हैं। क्या ऐसे अवलोकन आपने भी किए हैं?

- **राजेश उत्साही**

की तरह करते हैं।

टेलर बर्ड केवल नाम से ही दर्जिन नहीं है, बल्कि यह निपुणतापूर्वक सिलाई भी करती है। यह नन्ही चिड़िया पत्तियों को मोड़कर, उनके किनारों को रेशों से टांके लगाकर हर सिरे पर गांठ लगा देती है जिससे रेशा सरक न जाए।

पक्षी आम तौर पर घोंसले बनाने के लिए तिनके , घास-फूस आदि का प्रयोग करते हैं। परंतु कोलकाता, मुंबई, चेन्नै आदि महानगरों में रहने वाले कौवे भी मनुष्य की तरह आधुनिक हो गए हैं। मनुष्य झोंपड़ों से कांक्रीट युग में आया है तो ये शहरी कौवे भी तिनकों से लौह युग में आ गए। इन शहरों में कौवे घोंसले बनाने में लोहे के तारों का बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि तिनकों के अभाव में कौवों में यह परिवर्तन आया है।

अबाबील अपनी चोंच से थोड़ा-थोड़ा कीचड़ जुटाकर घोंसले बनाती है। कोलोकेलिया पक्षी अपनी थूक से ही घोंसला बनाता है। इस पक्षी की थूक हवा के संपर्क में आकर सूखकर ठोस मीठे पदार्थ में बदल जाती है। मिश्री जैसे मीठी थूक से बने ये घोंसले चीन, बर्मा, भारत आदि देशों में शौक से खाए जाते हैं।

दक्षिण ध्रुव पर बर्फ के मैदानों में रहने वाले पेंग्विन की घोंसला बनाने वाली जातियां पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े इकट्ठे करके अपने घोंसले बनाती हैं। प्रजनन काल में ऐसे पत्थरों की इतनी कमी रहती है कि इनकी चोरी तक करनी पड़ती है।

वैसे पक्षियों के अलावा कुछ चूहे भी घोंसले बनाते हैं। लेम्प्रे नामक मछली भी चट्टानों के टुकड़े इकट्ठे करके घोंसला बनाती है। भारत का प्रसिद्ध विषधर नागराज भी घोंसला बनाकर अंडे देता है। यह सर्प ज़मीन पर पड़ी पत्तियों को अपने शरीर से समेटकर एक ढेरनुमा आकार देता है। यही ढेर इसका घोंसला होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल

के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।

वार्षिक सदस्यता शुल्क सिर्फ 150 रुपए